अल्लाह की सिफात का जिकर

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हुजूरﷺ ने फरमाया कि अल्लाह तआला के ९९ नाम हे सौ से एक कम, जो उनको याद रखेगा जन्नत मे दाखिल होगा. (बुखारी / अन अबू हुरैरा रदी)

"याद रखने" का मतलब ये हे कि जो आदमी उनके मतलब और मफहूम को जाने और उनके जो तकाजे और मुतालबे हे उन्हे पूरा करे, दूसरे शब्दो मे उसका मतलब ये हे कि आदमी उन सिफात को अपने अन्दर जज्ब करे और अपनी पूरी जिन्दगी मे उनके तकाजो (माग) पर अमल करे.

इस हदीस मे सारे नामो की तफसील नही दी गई हे, उनको जानने का और उनके तकाजे मालूम करने का बेहतरीन तरीका ये हे कि आदमी कुरान मजीद पढे जिसमे अल्लाह ने अपनी तमाम सिफते बयान कर दी हे और उनके क्या तकाजे

हे और आदमी को उनसे किस तरह फायदा उठाना चाहिये ये सब कुरान मे बयान हुवे हे, लेकिन उनसे पूरे तौर पर वो ही फायदा हासिल कर सकता हे जो कुरान पढने और समझ कर पढने की आदत डाले, फिर हुजूरﷺ ने उन्ही को अपने शब्दो मे तकाजो के साथ बयान किया हे, उन दोनो का मुताला ही बताएगा कि अल्लाह की सिफात से जिकर और याददहानी कैसे हासिल की जाए, हम यहा कुछ जरूरी सिफात जिनको कुरान ने बार-बार दुहरया हे और जिनसे मोमिनीन की तबियत से बहुत ज्यादा काम लिया गया हे जिकर करते हे, और वो भी इख्तिसार के साथ क्योकि ये किताब उस विषय को फैलाकर बयान करने की इजाजत नही देती.

1. अल्लाह, ये उस जात का नाम हे जिस ने सारे संसार को बनाया ये शब्द गैर खुदा के लिये कभी नही बोला गया, ये जिस माद्दा से बना हे उसके दो मतलब हे, मुहब्बत से किसी की तरफ लपकना, बढना और खतरात से बचने के लिये किसी की तरफ भागना और उसकी पनाह मे अपने आप को देना, तो अल्लाह हमारा इलाह हे, उसका तकाजा ये हे कि हमारा दिल उसकी मुहब्बत से भरा हुआ हो हमारे दिल मे

उसकी मुहब्बत के सिवा और किसी की मुहब्बत न हो, हमारे जिस्म और जान की सारी कुव्वते और सलाहियते उसके लिये वक्फ हो, सिर्फ उसी की इबादत और बन्दगी हो, सिर्फ उसीके सामने झुके, और सिर्फ उसीके लिये भेट और कुर्बानी पेश करे, सिर्फ उसी पर भरोसा हो, और सिर्फ उसीके काम के लिये अपने को वक्फ कर दे, अल्लाह के सिवा और किसी से मुश्किलो और कठिनाईयो मे मदद न मांगे. ये तकाजा हे अल्लाह के माबूद होने का, और बिल्कुल उभरा हुआ तकाजा है.

2. रब, ये शब्द जिस माद्दे से बना हे इस के मतलब हे पालना पोसना, परवरिश करना, ठीक हालत मे रखना, तमाम खतरो से बचाते हुवे और बुलंदी के सारे असबाब का इन्तेजाम करते हुवे कमाल तक पहुचा देना, अल्लाह की रूबूबियत एक साफ बात हे मां के पेट के अंधेरो मे हवा और गिजा कौन पहुचाता हे? दुनिया मे आने से पहले बच्चे की गिजा का कौन इन्तेजाम करता हे? फिर वो कौन हे जो मां बाप और दूसरे लोगो के दिलो मे मुहब्बत भर देता हे? ऐसा न होता तो गोश्त के लोथडे को कौन उठाता? उसकी जरूरते कौन पूरी करता? फिर

आहिस्ता-आहिस्ता जिस्म और अकल की कुव्वतो को कौन परवान चढाता हे? जवानी और सेहत किसकी दी हुई हे? फिर ये जमीन और आसमान का कारखाना किसके लिये चलता रहता हे? क्या ये सब उसकी रूबूबियत का फैज नही? और क्या उसके सिवा कोई और हे, जो रूबूबियत मे उसका शरीक हो? अगर सिर्फ वोही हमारा मुहसिन और पालने वाला हे तो उसका बिल्कुल वाजेह तकाजा ये हे कि जुबान, हाथ, पाँव, जिस्म और जान की सारी सलाहियते सिर्फ उसकी होकर रहे. फिर उसने सिर्फ इतना ही नही किया कि रोटी और पानी का इन्तेजाम कर दिया हो, नही, बल्कि ये उसकी रूबूबियत का फैज हे कि हमारी जिन्दगी को सही हालत मे रखने के लिये और हमारी रूह की परवरिश के लिये उसने अपनी किताब भेजी जो तमाम एहसानो मे सबसे बडा एहसान हे. इस एहसान का तकाजा ये हे कि हम उसकी किताब की कदर करे, उसे अपने दिल और रूह की गिजा बनाये, उसको अपनी जिन्दगी मे समोये और शुक्रगुजार गुलाम की तरह दुनिया भर मे उसका चर्चा करे और जो लोग उसकी लज्जत और मिठास को ना जानते हो उन्हे उसकी जानकारी दे.

“अर्रहमानु अर्रहीमु” ये दोनो शब्द रहमत से बने हे, पहला जोश और खरोश और कसरत का मफहूम अपने अन्दर लिये हुवे हे और दूसरे मे हमेशगी और लगातारपन का मफहूम पाया जाता है. रहमान वो जिसकी रहमत बहुत ही जोश वाली हे, हवा, पानी, और दूसरी सारी जरूरियात की फराहमी उसी सिफत का अक्स हे, फिर उसी सिफत का नतीजा हे कि उसने सबसे बडी रहमत (कुरान) भेजी.

फरमाया अर्रहमानु, अल्लमल कुरआना, खलकल इन्साना अल्लमहुल बयाना, रहमान ने कुरान की तालीम (शिक्षा) दी, रहमान ने इन्सान को पैदा किया, रहमान ने इन्सान को बोलने की कुव्वत दी. और रहीम वो जिसकी रहमत का सिलसिला कभी खत्म नही होता, जिसका रहम और करम हमेशा रहने वाला है. इन सिफतो के मानने से लाजिम आता हे कि आदमी ऐसे ढंग से जिन्दगी गुजारे जिसको रहमान पसन्द करता हे, ताकि और ज्यादा रहमत का हकदार हो और उन उसूलो पर अपनी जिन्दगी की इमारत न उठाये जो उसको नापसन्द हे, वर्ना वो अपनी नजरेकरम फेर लेगा, फिर जो लोग दीन का काम कर रहे हो उन्हे बुरी हालतो मे मुसीबतो और कठिनाईयो

मे याद आना चाहिये कि जब वो रब्बेरहीम का काम कर रहे हे तो वो उन्हे इस दुनिया मे अपनी रहमतो से महरूम क्यो करेगा?
“अल काईमु बिल किस्ति” यानी आदिल और मुसिफ, तो जब अल्लाह आदिल और मुसिफ हे तो उसकी नजर मे वफादार और मुजरिम एक नही हो सकते दोनो के साथ वो एक ही तरह का मामला न इस दुनिया मे करेगा और न उस दुनिया मे करेगा.
“अल-अजीज” हुकूमत वाला, जिसकी हुकूमत सब को घेरे हुवे हो, जिसकी हुकूमत को कोई चेलन्ज न कर सके, अगर वो अपने वफादार गुलामो को गलबा और हुकूमत देने का फैसला करे तो कोई ताकत उसके फैसले को रोक न सके और जिसे वो सजा देना चाहे वो भाग न सके और न कोई उसके फैसले को टाल सके.
“अल-रकीब” निगरानी करने वाला, और जब वो बन्दो के कर्मो की निगरानी कर रहा हे तो उसीके मुताबिक बदला और सजा देगा.
“अल-अलीम” जानने वाला, पूरा इल्म रखने वाला कि कौन कहा हे और क्या कर रहा हे और किसकी क्या जरूरते हे

उसके वफादार बन्दे कहा और किन मुश्किलो मे फंसे हुवे हे, और ये कि वो इल्म रखता हे इस लिये किसीको कोई चीज देने मे नाइन्साफी नही करता हे हर एक को वोही कुछ देगा जिसका वो हकदार हे उसकी रहमत और नुसरत के मुस्तहिक नाकाम नही हो सकते और उसके गुस्सा और अजाब के मुस्तहिक कामियाब नही हो सकते.

ये कुछ जरूरी सिफात जिकर की गई जिन मे और सब सिफते सिमट कर आ जाती हे यहा इससे ज्यादा का मौका नही, इस बात को हम फिर दुहराते हे कि अल्लाह की तमाम सिफतो को तफसील के साथ जानने के लिये कुरान और हदीस का मुताला जरूरी हे, अरबी जुबान जो लोग जानते हे, और जो लोग नही जानते हे, दोनो के सोचने की चीज हे कि आयतो के आखिर मे अल्लाह की सिफते क्यो लाई गई हे और उनसे उन्हे क्या हिदायत मिलती है.